दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

विषय	:	दर्शनशास्त्र
कक्षा	:	एम0ए0 सेमेस्टर–III
सत्र	:	2019–20
प्रश्नपत्र का नाम	:	शांकर वेदान्त
शीर्षक	:	ब्रह्मसूत्रशांकर भाष्य (चतुः सूत्री)
उप–शीर्षक	:	ब्रह्मसूत्र संक्षिप्त परिचय
मुख्य शब्द	:	ब्रह्मसूत्र, शारीरक सूत्र, वादरायण सूत्र, वेदान्त सूत्र, प्रस्थानत्रयी

प्रस्तुतकर्त्री

प्रो0 शशि देवी सिंह
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
संकायाध्यक्ष, मानिविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी–221002

Self Declaraton

“The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/commercial purpose is strictly prohibited. The users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge.

स्वघोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्द्देश्यों के लिए है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथावा किसी अन्य उद्द्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस ई–कंटेंट में जो भी जानकारी दी गई है वह प्रमाणित और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।”

ब्रह्मसूत्र संक्षिप्त परिचय

- ब्रह्मसूत्र के रचयिता महर्षि बादरायण है।
- ब्रह्मसूत्र को ब्रह्मसूत्र इसलिये कहा जाता है कि इसमें ब्रह्म के स्वरूप की मीमांसा हुई है। ब्रह्म प्रतिपादक सूत्राणि ब्रह्मसूत्रमुच्यते ब्रह्म सत् चित आनन्द है इसका प्रतिपादन करने वाले सूत्र ब्रह्मसूत्र है।
- ब्रह्मसूत्र को शारीरक सूत्र भी कहते है क्योंकि शारीरक शब्द शरीर शब्द से व्युत्पन्न है–शरीरे भवः शारीरकः अर्थात् शरीर में रहने वाला जीवात्मा ही शारीरक है। चूँकि ब्रह्मसूत्र में परमात्मा के साथ जीवात्मा का भी प्रतिपादन किया गया है जिसे शारीर कहते हैं। इसलिए ब्रह्मसूत्र का नाम शारीरक सूत्र भी है।
- बादरायण द्वारा रचित होने के कारण इसे बादरायण सूत्र भी कहते है।
- ब्रह्मसूत्र को उत्तरमीमांसा भी कहते है इसके पूर्व जैमिनी के मीमांसा को पूर्वमीमांसा कहते है।
- इसे वेदान्त सूत्र भी कहते है क्योंकि इसमें वेदान्त (उपनिषदों का सार) है।
- प्रस्थान ग्रन्थ 3 है। उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र
- ब्रह्मसूत्र वेदान्त के 3 प्रस्थान ग्रन्थों में से एक है।
- वेदान्त दर्शन का आधारस्तम्भ प्रस्थान त्रयी है। क्योंकि इन्ही ग्रन्थों पर वेदान्त दर्शन या ब्रह्मविद्या आधारित है।

प्रतितिष्ठति ब्रह्मविद्यायेषु तत्प्रस्थान ग्रन्थम्– जिसमें ब्रह्म विद्या प्रतिष्ठित की गयी है वह प्रस्थान ग्रन्थ है। उपनिषदों में ऐक्यता लाने के लिये वादरायण ने ब्रह्मसूत्र की रचना की।

भारत में सबसे महत्वपूर्ण दर्शन वेदान्त दर्शन है। वेदान्त से मूल्यवान कोई दर्शन नहीं। वेदान्त ज्ञान मोक्ष दायक है, जन्म मरण का अन्त करने वाला ब्रह्मविद्या अध्यात्म विद्या है। प्रश्न उठता है वेदान्त है क्या? वेदानां अन्तः वेदान्तः। वेद का अन्तिम भाग उपनिषद् है। उपनिषद् का सार वेदान्त है। ब्रह्म के समीप पहुँचाने वाली विद्याा उपनिषद् है। उपनिषद् गीता, ब्रह्मसूत्र (प्रस्थानत्रयी) ही वेदान्त के मूल श्रोत है इन्हें क्रमशः श्रुति स्मृति एवं युक्ति भी कहते हैं। प्रस्थानत्रयी में उपनिषद का विशेष माहात्म्य है क्योंकि जीव ब्रह्म का विशुद्ध विवेचन उपनिषदों में ही मिलता है। उपषिदों के विचारों में सामजस्य व ऐक्यता लाने हेतु महर्षि बादरायण ने ब्रहमसूत्र की रचना की। यह उपनिषद् के वाक्यों को सूत्रवत ग्रंथित करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि बादरायण कृत ब्रह्मसूत्र भिन्न–भिन्न उपनिषदों में प्राप्त चिन्तन परम्परा का प्रमाणिक व व्यवस्थित संकलन है। अनेक आचार्यों ने ब्रह्मसूत्र की व्याख्या अपनी–अपनी दृष्टि से की है और अपने सिद्धान्तों को ब्रह्मसूत्र के अनुसार प्रतिपादित करने का प्रयास किया है।

ब्रह्मसूत्र पर आचार्य शंकर ने जो भाष्य किया उसे ही ब्र0सू0शां0भा0 कहते है। वेदान्त दर्शन का प्रतिपादन करने वाले लगभग सभी आचार्यों ने वादरायण के ब्रह्मसूत्र पर भाष्य किया है। अद्वैत की स्थापना हेतु शंकर ने शारीरक भाष्य लिखा।

विशिष्टाद्वैत की स्थापना हेतु रामानुज ने श्री भाष्य लिखा।

द्वैतवाद की स्थापना हेतु मध्यहवाचार्य ने पूर्णप्रज्ञभाष्य लिखा।

द्वैताद्वैतवाद की स्थापना हेतु निम्बार्क ने वेदान्त परिजात भाष्य लिखा।

शुद्धाद्वैतवाद की स्थापना हेतु बल्लभचार्य ने अणुभाष्य लिखा।

शैवविशिष्टाद्वैतवाद की स्थापना हेतु श्रीकण्ठ ने शैवभाष्य लिखा। जो प्रमुख है। ये सभी वेदान्ती है।

आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्मसूत्र में कुल 555 सूत्र है। विषय के अनुसार सभी सूत्रों को 4 अध्याय में विभक्त किया गया है। ब्र0सू0 में 4 अध्याय है प्रत्येक अध्याय में 4 पाद है।

1. प्रथम अध्याय का नाम समन्वयाध्याय है। इसमें यह दिखाया गया है कि ब्रह्म ही सभी श्रुतियों का प्रतिपाद्य विषय है। क्योंकि इसी में समस्त शास्त्रों श्रुतियों का समन्वय देखा जा सकता है। इस प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के प्रथम चार सूत्र चुतःसूत्री नाम से प्रसिद्ध है।

ब्रह्मसूत्र के प्रथम चार सूत्रों को चतुःसूत्री कहा जाता है। ये सूत्र हैं–'अथातोब्रह्मजिज्ञासा', 'जन्माद्यस्य यतः', 'शास्त्रयोनित्वात्' तथा 'तत्तुसमन्वयात्'। यह चतुःसूत्री अदैतवेदान्त के सारतत्व अथवा सारांश है। इनमें अदैतवेदान्त का सम्पूर्ण रचनात्मक पक्ष निहित है। ब्रह्मसूत्र (1/1/1) के प्रथम सूत्र अथातोब्रह्म जिज्ञासा में ब्रह्म के विषय में जिज्ञासा की गई। द्वितीय सूत्र जन्माद्यस्य यतः में ब्रह्म के स्वरूप तथा तटस्थ लक्षण की चर्चा विधिपूर्वक की गयी तथा तृतीय सूत्र 'शास्त्रयोनित्वात्' के माध्यम से यह प्रतिष्ठित किया गया कि ब्रह्म ही शास्त्रों का कर्त्ता (योनि) है तथा ब्रह्म के विषय में शास्त्र की प्रमाण है। दूसरे शब्दों में, ब्रह्म का ज्ञान शास्त्र से होता है किन्तु जैमिनिसूत्र के अनुसार शास्त्र का अर्थ 'धर्म' है, 'ब्रह्म' नहीं। मीमांसकों के इस पक्ष पर आचार्य शंकर कहते है कि शास्त्र का अर्थ 'धर्म' न होकर 'ब्रह्म' है। इसी तथ्य को वह ब्रह्मसूत्र के चतुर्थ सूत्र 'तत्तुसमन्वयात्' के माध्यम से व्याख्यायित करते हुए कहते है कि वेदान्त वाक्यों का निहितार्थ ब्रह्म ही है अर्थात उसी ब्रह्म में वेदान्तवाक्यों का समन्वय है। श्रुति का परम लक्ष्य शुद्धः बुद्धः मुक्त, सत् चित् आनन्द स्वरूप ब्रह्म बोध ही है। इस सूत्र में यह प्रदर्शित किया गया है कि समस्त वेद, उपनिषद् एक स्वर से ब्रह्म को वेदों का मुख्य विषय और जगत की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का कारण बताते है। इसीलिए समस्त शास्त्रों का समन्वय ब्रह्म में होता है। ब्रह्म के विषय में शास्त्रों को तभी प्रमाण माना जा सकता है, जब शास्त्रों का प्रतिपाद्य विषय ब्रह्म ही हो। यह विषय की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

2. द्वितीय अध्याय अविरोधाध्याय है। इसमें प्रथम अध्याय की बातों का तर्क से मण्डन हुआ व विरोधी दर्शन का खण्डन हुआ। ब्रह्म में अविरोध दिखाया गया है।

3. तृतीय अध्याय साधनाध्याय है। इसमें मोक्ष के साधन रूप में अभ्यास, वैराग्य आदि का विवेचन किया गया है।

4. चतुर्थ अध्याय फलाध्याय है। इसमें बताया गया है कि उपर्युक्त साधन के फलस्वरूप जो साधक को मोक्ष की प्राप्ति होती है उसका वर्णन है। इसलिये इसे फलाध्याय कहा गया है।

सन्दर्भ ग्रथ सूची :

1. ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम्, सत्यानन्दी दीपिका, भाषानुवाद स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, प्रकाशक गोविन्दमठ, टेढ़ीनीम, वाराणसी, तृतीयवृत्ति–विक्रम संवत्–2035।
2. ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य (चतुःसूत्री), व्याख्या तथा अनुवाद, डॉ0 रमाकान्त त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, चतुर्थ संस्करण 1.9.91।
3. अद्वैतवेदान्त की तार्किक भूमिका, जगदीश सहाय श्रीवास्तव, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण–2003।